भारत
के
बिस्मार्क
प्रदीप कुमार

भारत के विस्मार्क

शुभाशंसा

डॉ. यस. पी. शर्मा

रचनाकार

प्रदीप कुमार

प्रकाशक :

अर्चना पब्लिकेशन

127, मीरा नगर कालोनी, चितईपुर, वाराणसी

मो. 09415824634

© प्रकाशक :

प्रथम संस्करण- जनवरी, 2011

मूल्य- ~~रु~~- 100/-

मुद्रक :

श्वेता प्रिंटिंग वर्क्स

रामकटोरा रोड, वाराणसी

फोन : 0542-2204385

मो. : 09451895411

भारत के विस्मार्क

भारत के विस्मार्क

विषय-सूची

शुभाशंसा

प्रस्तुत रचना श्री प्रदीप कुमार जी की मनोविनोदात्मक राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविता का रूप है। भाषा-शैली की दृष्टि से तथा कवित्व की दृष्टि से अतिसाधारण होने पर भी भावात्मक दृष्टि से अवलोकन करने पर उनके हृदय की अगाध पुकार देश प्रेम पर भासती है। खेद की बात है, स्वतन्त्रता आन्दोलन काल में इस प्रकार के भावुक व्यक्ति होते तो हमारी मातृभूमि धन्य हो जाती। लेखक के हृदय के उद्‌गार पर सूक्ष्म विचार करने से कविता की विधाओं की जो कुछ न्यूनता है, भाव प्रधानता के कारण वे समस्त त्रुटियाँ अभिभूत हो जाती है।

जीवन जीते हर जीव जहाँ,
फिर एक दिन मर जाते हैं ।
फिर ऐसे हैं लोग कहाँ,
जो इतिहास पुरुष कहलाते हैं ॥

यह कविता जिस स्वतन्त्रता सेनानी को इंगित करती है, इससे सिद्ध होता है कि लेखक का हृदयाकाश देश-सेवा तथा मातृभूमि के उद्धार पर समर्पित है।

भविष्य में इसी प्रकार के उद्‌गार द्वारा जनता जनार्दन को देशप्रेम की ओर लेखक अग्रसर करते रहेंगे, ऐसा विश्वास तथा आशीर्वाद है।

डॉ० यस. पी. शर्मा
अवकाश प्राप्त
विभागाध्यक्ष
संस्कृत महाविद्यालय
मंगलागौरी, वाराणसी

दो शब्द

मैं राय बरेली जिले के ऐहार नामक गाँव में पदस्थ था। यहीं पर रेल कोच फैक्ट्री का निर्माण कार्य प्रगति पर था। वाराणसी से रायबरेली जा रहा था रेलवे स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार कर रहा था। रेलवे स्टेशन पर लगे बुक स्टाल पर हिन्द के सरदार नामक पुस्तक दिखी। कीमत तो मात्र रु. 40/- ही था लेकिन उस समय पर्याप्त धन नहीं था। अगली बार वह पुस्तक बिक चुकी थी दुकानदार ने पुस्तक मगाने का आश्वासन दिया लेकिन एक दो माह तक पुस्तक नहीं ला सका। पुस्तक सीधे प्रकाशक, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद के यहाँ से मँगवाया।

उस समय वित्तीय समावेश, राष्ट्रीय वृद्धावस्था पैशन, मनरेगा आदि के चलते शाखा में कार्य की अधिकता थी। इसी बीच में यह पुस्तक पढ़ने लगा। इसकी प्रस्तावना पूर्व प्रधान मंत्री मोरार जी देसाई ने लिखी थी। फिर पता नहीं कहाँ से कैसे हमें प्रेरणा मिली इस पुस्तक की रचना के बारे में शुरू में पुस्तक में लिखी बाते जो जँच जाती थी, उसे नोट कर लेता था। यह पुस्तक इतनी प्रभावित करेगी कि एक रचना तैयार हो जायेगी सोचा भी नहीं था।

सरदार पटेल के संकल्प शक्ति के आगे बड़े-बड़े विपदाओं ने घुटने टेके हैं। हम लोग सुनते आए हैं कि अंग्रेजो की नीति रही 'फूट डालो और राज करो' जब अंग्रेजों ने भांरत को छोड़ने का मन बना लिया तो इसे टुकड़ों में आजादी देने का मन बना लिया और सारे देशी रियासतों को आजाद कर दिया। फिर इन नरेशों में आपसी मतभेद, एवं महत्वाकांक्षा भी परिलक्षित हुआ। फूट में लूट के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए सवा पाँच सौ से ज्यादा देशी रियासतों को एक में मिलाते हुए विशाल भारत का निर्माण कर डाला। मजेदार बात यह रही कि ये शासक नहीं रहे। भारत वर्ष के इतिहास में शायद ही ऐसा कोई शासक होगा जिसका शासन इतने बड़े क्षेत्रफल में रहा होगा।

इनके जीवन की एक एक घटना हमें प्रेरणा देती है, चाहे वह बचपन में हुए फोड़े को गरम सलाख से स्वयं दागना रहा हो, या रास्ते में गड़ा पत्थर उखाड़ फेकने की जिद या फिर विदेश में पढ़ाई करने की जिद। अनेक बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए उसे हासिल करना। युवावस्था में पत्नी का साथ छूटना फिर आजीवन विधुर रहने की दृढ़ इच्छा शक्ति। पुत्री 'बहन' मणिवेन का त्याग भी गंगापुत्र गांगेय से किसी भी मायने कम नहीं आंका जा सकता। विकट परिस्थितियों में देश सेवा का ऐसा मिशाल बहुत ही कम देखने को मिलता है। सम्राट अकबर, अशोक महान आदि ने भारत निर्माण में कितनों का खून बहाया और कितना समय लगाया ? लेकिन इस भारत रत्न ने अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी से आशीर्वाद ले कम से कम ताकत का इस्तेमाल करके कम से कम से कम समय में अटूट भारत का निर्माण कर डाला। पाकिस्तान की हर चाल को मात दिया।

इस पुस्तक में सरदार के जीवन के विभिन्न पहलुओं को शब्दों में पिरोने की कोशिश की गई है आशा है कि यह सुधी पाठकों की कसौटी पर खरी उतरेगी।

इस पुस्तक को तैयार करने में योगदान के लिए आचार्य श्री निवास शर्मा जी तथा इसे उत्साहपूर्वक प्रकाशित करने हेतु श्री सतीश कुमार जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। अपनी सुभाशंसा लिखने के लिए श्री शर्मा जी का भी मैं विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ।

जीवन जीते हर जीव जहाँ।
फिर एक दिन मर जाते हैं।।
पर ऐसे है लोग कहाँ?
जो इतिहास पुरुष कहलाते हैं।।

❀❀❀

प्रवेश

आपस में हम जब लड़े,
कमजोर हुयी हमारी ताकत।
आपस में ही रहा लड़ाता,
घात लगाए बैठा दुश्मन।।

काग दृष्टि रहा गड़ाए,
सोने जैसी चिड़ियाँ पर।
चाह नहीं उसका भारत-हित,
ध्यान रहा बस धन-दौलत पर।।

सुनकर भारत की महिमा,
करने आये थे व्यापार।
आपस में हमें लड़ाकर,
बना लिये हमें गुलाम।।

बोले झूठ, चली चालें,
नित नये नियम निकाले।
आपस में डाल फूट बीज,
राज्य हड़पते चले गये ।।

भोली भाली जनता पर,
जुल्म, अत्याचार बढ़ाए।
कुशल कारीगरी, प्रतिभा,
चैन सुख सब छीन लिये।।

धीरे- धीरे सोने की चिड़ियाँ,
अपनी चमक खोने लगी।
इन लुटेरों के आगे,
कंगाली की ओर बढ़ने लगी।।

ढाका मलमल की टूटी कमर,
जब कारीगरों की हाथ कटी।
विदेशी से देशी महँगी हुयी,
जब महसूलों की मार बढी।।

ढूँढा नहीं पीड़ा का हल,
सदैव उन्हें लूटते रहे।
जहाजों में भर-भर कर,
सारा 'कोहिनूर' ढोते गये।।

बाढ़ रहे या फिर सूखा,
चाहे मचे हा-हाकार ।
लगान समय से चाहिये,
भले नहीं हो क्षुधा शांत।।

मानवता सिसकियाँ लेती रही,
पर नहीं रुका अत्याचार।
व्यापारी बन बैठा शासक,
लिये हाथ फिरंगी तलवार।।

प्रजा पुत्र,राजा पिता समान,
सदियों से रहा जहाँ वर्ताव।
शांति सुखमय माहौल में,
आने लगी बाधायें निर्बाध।।

चिर प्रतीक्षित सुख-शांति में,
आने लगी बाधायें विविध।
घरो में ही बहू-बेटियों की,
आबरु हो गयी असुरक्षित।।

समस्यायें ऐसी नहीं कोई,
जिसका समाधान न हो सके।
लगन तपस्या के आगे,
हर विपदा है घुटने टेके।।

इन कुरीतियों से लड़ने,
अनेकों वीर आगे आये।
आजादी की लड़ाई में,
सब कुछ स्वाहा किये।।

इन वीर सपूतों के चलते,
आया नया सवेरा।
जन जन के जीवन में,
नया आस विश्वास जगा।।

जिनको पाने के लिये,
बरसों है बरबाद किये।
आसानी से छोड़े कैसे?
जब तक नहीं परेशान हुये।।

जन - जन में आयी जागृति,
नहीं चलेगी अब कुव्यवस्था।
कुरीतियों से लड़ने,मशाल उठाई,
तब जाकर मिली सुराज व्यवस्था।।

भारतीय क्षितिज का ध्रुवतारा,
करमसद गांव में जन्म लिया।
स्वतंत्रतान्दोलन,नव-निर्माण में,
अमिट छाप वह छोड़ गया।।

रोग शय्या पर पड़ा रहा,
पर चिन्ता सदा रही भारत की।
कैसे हो नवनिर्माण एक,
स्वतंत्र मजबूत भारत की।।

सदियाँ बीत गयीं भारत,
को गुलाम बनाने में।
जाते-जाते रही कोशिशे,
बँट जाये यह टुकड़ों में।।

सदियों से रह रहे साथ-साथ,
साम्प्रदायिक जहर फैलाया।
जाते जाते यहाँ से दोनों को,
आपस में लड़ाने का मन बनाया।।

कुशल शिल्पकार ने,
इच्छाओं पर पानी फेरा।
बिखरी मोतियों को मिला,
एक अटूट माला बना डाला।।

सदियों से जो काम न हो सका,
वो काम सरदार कर गया।
भारत के नव - निर्माण में,
अमिट छाप वह छोड़ गया।।

दिखला दिया दुनिया को,
चाणक्य जिंदा है भारत में।
विस्मार्क,लौह पुरुष, सरदार,
सब क्षमता है भारत में।।

सरदार पटेल

जीवन जीते हर जीव जहाँ,
फिर एक दिन मर जाते हैं।
पर ऐसे हैं लोग कहाँ?
जो इतिहास पुरुष कहलाते हैं।।

धरती माँ भी धन्य हो गयी,
ऐसे ही जन जनने से।
हर साँस लगा दी बस,
देश को एक बनाने में।।

आँधी आये या तूफान,
विचलित नहीं हुये विस्मार्क।
एक बार जो ठान लिया,
पूरा कर ही दम लिया।।

दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ,
निपटाये सब अपना काम।
अनगिनत बाधायें आयीं पग में,
विचलित नहीं हुए सरदार।।

पद मिला कोई भी,
काम में विश्वास जताया।
पूरा कर वह काम,
तभी आराम जताया।।

अंग्रेजो ने जहाँ,
फूट डाल राज किया।
धीरे-धीरे राज्यो पर,
अपना अधिकार किया।।

वही सरदार बल्लभ भाई ने,
फूट में लूट का आनंद लिया।
आपस में बिखरे मोतियों का,
एक मजबूत माला बना दिया।।

कार्यशैली देख सरदार की,
चकित हुई फिरंगी सरकार।
रची गयी सारी चालें,
सरदार के आगे हुई बेकार।।

गरजने में विश्वास नहीं,
बरसने में विश्वास जताया।
रियासतों को एक में पिरो,
नव भारत इतिहास बनाया।।

एकता, अखंडता रहे सुरक्षित,
सदा चिन्तित रहा लौह पुरुष।
इसके लिये जितना सम्भव था,
देश सेवा किया लौह पुरुष।।

प्रत्येक धर्म, जाति, नागरिक से,
सहयोग लिया लौह पुरुष।
कड़ी मेहनत, लगन, तपस्या से,
असंभव को संभव कर गया लौह पुरुष।।
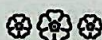
बचपन एवं विद्यार्थी जीवन

साधन - संपन्न नहीं था बचपन,
ग्रामीण परिवेश में बीता बचपन।
नटखट रहता सदा ही बचपन,
पर वहाँ भी लिये अटूट निर्णय।।

घर काम में हाथ बटाना,
पिता संग खेतों में जाना।
खेती ही एक सहारा था,
बिन मेहनत नहीं गुजारा था।।

पिता की छत्र छाया में,
नन्हा पौधा बढ़ने लगा।
लगन, परिश्रम, मेहनत से,
मजबूत बुनियाद गढ़ने लगा।।

अल्प सुविधाओं के साथ,
थामा शिक्षा का मशाल।
पढ़ने रोज पेटलाद को जाते,
मीलों सफर पैदल चल जाते ।।

पेटलाद में अंग्रेजी शाला,
करमसद से वो जाते थे।
छः-सात मील पैदल चलकर,
समय से पहुँच जाते थे।।

समय से वो पाठशाला पहुँचे,
अंधेरे में ही चल देते थे।
रास्ते में गड़ा एक पत्थर,
लोग उससे टकरा जाते थे।।

दोस्तों संग निकले एक दिन,
चल दिये पाठशाला।
भिड़ गये पत्थर निकालने,
परिश्रम कर उखाड़ फेंका।।

राह में यह गड़ा पत्थर,
राहगीरों को बाधा पहुँचाता था।
निश्चय किया उखाड़ फेंकने का,
उखाड़ कर ही दम लिया।।

तेज गति से फिर चलकर,
समय से पहुँचे पाठशाला।
बचपन में ही दृढ़-निश्चय,
होनहार,वीरवान सा झलक दे गया।।

कोमल कंधों पर बड़ा बोझ,
बचपन में ही लेना सीख गये।
तनिक नहीं घबराये वो इससे,
हर कार्यंजाम देते चले गये।।

बचपन में हुआ एक फोड़ा,
जब नहीं दिखा कोई राह।
फोड़े से निपटे कैसे,
कोई नहीं आया जब पास।।

कोमल काया पर फोड़ा,
देख सबं घबरा जाते थे।
तरह-तरह के उपचार बताते,
पर हिम्मत नहीं जुटा पाते थे !।

कल्पना कर अपने उपर,
रोंगटे खड़े हो जाते थे।
फोड़े से निपटे कैसे?
सलाह भर दे जाते थे।।

भयभीत देख सब जन को,
विचलित नहीं हुआ बालक।
असहनीय पीड़ा को समझ,
स्वयं लिया फिर निर्णय।।

गरम सलाख लिये स्वयं,
फोड़े को वे लिये दाग।
तनिक भी उफ नहीं किये,
संकल्पशक्ति थी जो उनके पास।।

इच्छाशक्ति रहे मन में,
सब संभव हो जाता है।
अगर नहीं रहे ये मन में,
सब धूलधूसरित हो जाता है।।

दृढ़ता, संयम, अनुशासन,
जवाबदेही, कर्त्तव्य, लगन।
शुरु से ही उनके गहने थे,
विपदा में तनिक न घबराते थे।।

तीनों लोक में है गुरु महान,
पहले गुरु फिर है भगवान्।
गुरु नहीं करे जब अपना काम,
कहां से होगा जग – कल्याणं?

शिक्षण छोड़, शिक्षक करता था व्यापार,
विद्यार्थियों को बना लिया इसका आधार।
पठनसामग्री क्रय को होते, उससे मजबूर,
नहीं ऐसा होने पर तंग होते थे जरुर।।

बल्लभ को यह जेंची नहीं,
खिलाफ इसके कर दी बगावत।
संगठित कर छात्रों को कर दी हड़ताल,
शिक्षक झुका, गलती को किया स्वीकार।।

शिक्षालय, हर आलय से है पवित्र,
भला कोई कर सकता कैसे अपवित्र?
हर स्थली से, पवित्र है गुरुस्थली,
सत्य हेतु नाड़ियाद में लड़ी लड़ाई।।

गरीबी, अभाव से जूझते रहे,
परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे।
मैट्रिक में फेल, पर नहीं हुये बेचैन,
बाईस-बसंत पार, इसमे हुए उत्तीर्ण ।।

उँची शिक्षा

जिसने भी उँची शिक्षा की,
अपने में आस जगायी।
पालकगण ने उसमें,
अहं भूमिका है निभायी।।

स्वयं या सहयोग ले,
अरमान पूरी करायी।
बच्चों के दिल की इच्छा,
की आस नहीं बुझने पायी।।

बचपन से ही रही तमन्ना,
देखें अंग्रेजों का देश।
कहाँ से आकर शासन करते,
कैसे हैं वो हमसे नेक?

सरदार ने भी दिल में,
उच्च शिक्षा की आस जगायी।
पर कहीं से भी नहीं,
आशा की किरण पड़ी दिखायी।।

पिता जी मंदिर में रहते,
जीवन वहीं बिताते थे।
पैसा पास नहीं था उनके,
इच्छा कैसे वो पूरी करते?

इच्छापूर्ति साधन मौजूद नहीं,
इच्छा भी, जो मर रही नहीं।
विलायत हेतु जरूरत धन की,
कोई धन देने को तैयार नहीं।।

एक साथी से धनश्रोत का पता चला,
जब इडर इस्टेट का नाम लिया।
दोनों इडर जाने की योजना बनायी,
गये वहाँ, पर किस्मत नहीं खुल पायी।।

पठन हेतु विलायत गमन,
बिना धन संभव नहीं।
किसी से हमें यह धन,
अभी मिलने वाला नहीं।।

बचपन की इच्छाओं को,
लागू करूँ इसे कैसे?
पहले धन का जुगाड़,
करूँ जैसे तैसे।।

चाह रही उनके मन में,
बैरिस्टर बन जाने की।
घर की स्थिति थी नहीं,
ऐसा कुछ कर सकने की।।

बैरिस्टरी की थी प्रबल तमन्ना,
यह बात सालती रहती थी।
बैरिस्टर बनना आसान न था,
धन दौलत का जुगाड़ न था।।

मुख्तारी में की मेहनत जमकर,
परिणाम मिला भी अति सुन्दर।
प्रेक्टिस चमकी, नांम हुआ,
उपर से धन का बरसात हुआ।।

लेते हाथ जटिल मुकदमा,
तनिक न विचलित होते थे।
अगर हारे कोई मुकदमा,
फीस न उनसे लेते थे।।

एक मुकदमे में लीन थे सरदार,
तभी उनके घर से आया एक तार।
तार देख सब हो गये बेचैन,
पढ़ तार उसे वे, जेब को चढ़ाए भेंट।।

मुकदमे में पुनः करने लगे पैरवी,
सारा दारोमदार सरदार के उपर था।
थोड़ी सी चूक बन जाती मुसीबत,
जज का फैसला भी जो आना था।।

अपने मुव्वकिल को दिलायी जीत,
सबकी आँखों में खुशियाँ है छायी।
पर सरदार की ऑखे डबडबा आयी,
अर्धांगनी जो साथ नही निभा पायी।।

हुआ वज्रपात सरदार के दिल पर,
दृढ़ता संयम से काम लिए।
मुव्वकिल को दिलाकर विजय,
अद्भुत मिशाल पेश किए।।

छोड़ गयी वो दो दो लाल,
सरदार अब कैसे निपटे?
लम्बा है जीवन काल,
अब बिताए जीवन कैसे?

लक्ष्य से विचलित नहीं हुए,
धैर्य एकाग्रता से काम किये।
दिन रात कड़ी मेहनत कर,
परिवार का भरण-पोषण किये।।

उसी में से बचाये धन-दौलत,
नहीं आगे किसी के हाथ पसारे।
करी तैयारी लक्ष्य तक जाने की,
हर साधन हैं स्वयं जुटाये।।

विलायत गमन का,
समय जब आया।
सारी तैयारी पूरी कर,
वीसा, पासपोर्ट मँगवाया।।

इस बीच अंग्रेज ने इच्छा जताई,
विलायत जा पहले मैं कर लू पढ़ाई।
पर तनिक न इससे हुए विचलित
अंग्रेज जाए विदेश, इस हेतु गये जुट।।

बड़े भाई को लन्दन भिजवाया,
सारा खर्च अपने सिर उठाया।
हिम्मत नहीं हारा महान् पुरुष,
पुनः धन संग्रह में लगा लौह पुरुष।।

भाई के लौटने के बाद,
स्वयं करने लगे तैयारी।
बैरिस्टरी का लक्ष्य लिए,
चले विदेश करने पढ़ाई।।

करने गये विद्याध्ययन,
मौज मस्ती में तनिक न डूबे।
चकाचौंध की दुनियाँ में वो,
अपना संस्कार नहीं भूले।।

तपस्या सा जीवन अपनाया,
विलायती हवा में नहीं फँसे।
जिसके लिए गये विलायत,
उसके आगे सब कुछ भूले।।

ग्यारह मील पैदल चलकर,
पुस्तकालय खुलते पहुँच वो जाते।
बन्द होने को होता जब वह,
तब ही उठकर घर को आते।।

परीक्षा पास की चिंता नहीं,
अध्ययन की बस चिंता करते।
परिणाम मिला भी अति सुन्दर,
प्रथम श्रेणी में, आये प्रथम पर।।

मिला पारितोषिक पचास पौण्ड का,
दो टर्म छूट का उपहार लिये।
वही प्रसन्न होकर परीक्षक,
प्रतिष्ठित पद का प्रस्ताव किये ।।

सम्मान के बदले सम्मान प्रकट कर,
सिफारिश का लाभ नहीं उठाये।
लक्ष्य प्राप्ति की खुशी लेकर,
बिन भटके स्वदेश वो आये।।

खेड़ा आन्दोलन

भारी बारिश के कारण,
सारी फसल बरबार हुई।
खेड़ा के गरीब किसानों की,
मानो कमर ही टूट गयी।।

कहते है जल ही जीवन है,
जल बिन यह संभव नहीं।
चहुँओर अब जल ही जल है,
अधिकता होती सबसे बुरी।।

हैजा, संक्रमण यहाँ फैल रही,
यह जल ही यहाँ काल बनी।
लोगों का हो रहा जीवन बेहाल,
खेड़ा में मचा चहुँओर हाहाकार।।

ढह गये सारे कच्चे मकान,
खड़े भी नहीं रहे पक्के मकान।
इनकी भी नीवें हिल गयी,
बाढ़ से आयी विपदा बड़ी।।

प्रकृति की इस मार से,
सब जन हो गये निढाल।
शासन से कुछ मदद की,
हर जन लगा रहे आस।।

दो-तिहाई की बरबादी पर,
आधा लगान मॉँफ होता था।
तीन-चौथाई की बरबारी पर,
पूरे माफी का प्रावधान था।।

नियम बनाया जिन लोगों ने,
कायम रहना, कठिन हो रहा।
इन लुटेरों की क्षुधा शांत,
होने का नहीं नाम ले रहा।।

दाने-दाने को मोहताज किसान,
कहाँ से लाकर देवे लगान।
एक तरफ भूखमरी-अकाल,
दूसरी ओर सरकारी अत्याचार।।

इस नियम की वे दे दुहाई,
लगान माफी की गुहार लगाई।
अपनी व्यथा, पीड़ा से,
सरकार को अवगत कराई।।

उनकी कानों पर पीड़ा का,
तनिक जूँ भी नहीं रेंगा।
इच्छाओं का गला घोंटा,
माफी से इंकार किया।।

किसानों की हालत थी गंभीर,
बाढ़ में फसल जो बह गयी।
सरकार नहीं दे रही माफी,
फैल रही चहुँओर भुखमरी।।

विलायत से लौटे गाँधीजी,
चंपारण में लड़ रहे लड़ाई।
निलहो से जहाँ पीड़ित किसान,
दूर कर रहे पीड़ा उनकी।।

आशानुकूल चल रही लड़ाई,
आशा की किरण पड़ रही दिखाई।
सुन–देख सफलता की कहानी,
इतिहास रच रही यही कहानी।।

खेड़ा के किसानों में जगी आशा,
गाँधीजी के पास संदेशा भेजा।
अपनी पीड़ा का हाल बताया,
वस्तुः स्थित से अवगत कराया।।

सुन पीड़ा खेड़ा जन की,
विचलित हो गये गांधी जी।
बिहार से आकर वापस,
साथियों से मिले गाँधी जी।।

न्याय के संग कर रही,
ब्रिटिश सरकार खिलवाड़।
बरबाद फसल, मर रहे किसान,
फिरंगी को चाहिए, सिर्फ लगान।।

अहमदाबाद के गुजरात क्लब में,
अन्याय के विरुद्ध बिगुल है फूँका।
मौजूद वहीं सरदार वल्लभ भाई,
गाँधीजी का दामन थाम लिया।।

वल्लभ भाई को थमाया,
खेड़ा आन्दोलन की कमान।
किसानों की पीड़ा हरने,
आगे आये लौह पुरुष सरदार।।

सत्याग्रही को प्रतिज्ञा का,
बापू ने महत्व बतलाया।
सबसे कीमती निधि है प्रतिज्ञा,
हर कीमत पर हो इसकी सुरक्षा।।

एक जुट किया सभी को,
फिर सबसे प्रतिज्ञा करायी।
अंतिम दम तक लड़ेंगे,
अन्याय के विरुद्ध लड़ाई।।

किसान के घर पैदा होकर,
वल्लभ भाई बने वैरिस्टर।
कितनी ही कुर्बानियाँ देकर,
आखिर बने थे वो वैरिस्टर।।

खेड़ा सत्याग्रह ने सरदार का,
पत्थर दिल भी पिघला दिया।
वैरिस्टर से पुनः इनको,
मानो! किसान ही बना दिया।।

बापू के साथ सरदार को,
काम करने को सुअवसर मिला।
एक-दूजे को आपस में समझने का,
यहाँ पर एक अच्छा अवसर मिला।।

बापू की कसौटी पर,
खड़े उतरे सरदार।
खेड़ा आन्दोलन में,
कुंदन बन गये सरदार।।

लोक नायक लोगों में पहुँचे,
लोगों में आत्म विश्वास जगा।
विपत्ति से लड़ने के लिए,
सभी ने अपने को तैयार किया।।

सरदार के आने से,
निर्भय बन गये किसान।
फिरंगी बंदूकों से,
लड़ने को हुए तैयार।।

बिखरे, पिछड़े, किसानों को,
जगाना कोई आसान न था।
इन लोगो में विश्वास जगाना,
बहुत ही कठिन कार्य जो था।।

इस विपत्ति के आने से,
सारे किसान एक साथ हुए।
अन्याय के विरुद्ध लड़ाई में,
कट मरने को तैयार हुए।।

सत्याग्रह के आगे,
सारे हथियार बेकार हुए।
एक-जुट किसानों के आगे,
फिरंगी ने हथियार डाल दिए।।

जीत मिली किसानों को,
लगान में पूरी छूट मिली।
एक जुटता में होती है ताकत,
खेड़ा को एक मिशाल मिली।।

यदि वल्लभ भाई नहीं होते,
शायद ही यह काम हुआ होता।
बापू को जहाँ वल्लभ रत्न मिला,
वहीं वल्लभ को सच्चा गुरु मिला।।

बारदोली

सूरत जिला, वारदोली तहसील,
प्रकृति से भरपूर उपजाऊँ जमीन।
लहलहाते जहाँ खेत खलिहान,
किसान थे वहाँ काफी खुशहाल।।

पर खेती तो मानसून का जुआ है,
सूखा बाढ़ की हरदम पड़ती छाया है।
बरस गया तो भीग गया,
नहीं बरसा तो सूख गया।।

बाढ़ से परेशान किसान,
उपर से लगान वृद्धि की मार।
कैसे पाए इससे निज़ात,
मौत का सब कर रहे इन्तजार।।

फिरंगी को यह रास न आया,
मदद योजना कत्तई नहीं भाया।
इनको लूटने का है मन बनाया,
तीस फीसदी. इन पर महसूल बढाया।।

बाढ़ से पीड़ित किसान,
नहीं सूझ रहा कोई उपाय।
कैसे पाए इस विपदा से निजाद,
सरकारी मदद की सब लगाए आस।।

पेट की क्षुधा शांत हो कैसे?
घर में अन्न का टुकड़ा नहीं।
सरकार को समझायें कैसे?
जो बनी बैठी अंधी बहरी।।

अपनी होती यदि सरकार,
तो फिर काहे का हा-हाकार।
आशा की चिनगारी जलती रहती,
मुसीबत ऐसी नहीं झेलनी पड़ती।।

कोई न कोई सामने आता,
बोझ हमारा कम कर जाता।
जीने की आशा जगती,
ऐसी सूरत नहीं देखनी पड़ती।।

सागर से पानी ले उड़ता बादल,
धरा पर जल बरसाता बादल।
उँच नीच न देखे बादल,
सबको तर कर जाता बादल।।

काश! ऐसी होती यह सरकार,
लगान माफ कर देती इस बार।
कमी पूरी हम करते अगली बार,
हो जाता हम सबका समाधान।।

रोने धोने से नहीं होगा,
कोई समस्या का समाधान।
एक साथ सब मिलकर,
निकाल लेंगे इसका समाधान।।

परिणाम पाने के लिये,
कुछ खोना भी पड़ता है।
माँग मंगवाने के लिये,
विपदायें झेलना भी पड़ता है।।

कठिनाइयों में बँटे नहीं,
सदा एक बने रहे।
झुकाने की हो कोशिशें,
पर हमेशा तने रहे।।

सत्य से परे झुके नहीं,
उस पर सब अड़े रहे।
पटेल के ये मंत्र,
खेड़ा में सफल रहे।।

पीड़ा सुन किसानों की,
दौड़े आये बल्लभ भाई।
समस्यायें सुन उनकी,
द्रवित हुए बल्लभ भाई।।

निर्दयी सरकार, कर रही अत्याचार,
एक तरफ बाढ़ की मार।
दूसरी लगान वृद्धि की मार,
ऐसे में जिंदा कैसे रहे किसान।।

आन्दोलन से पहले,
अपनों को टटोला।
दमन, हानि, कष्ट,पीड़ा,
सबको पड़ेगा हमें पीना।।

सरकार करेगी हम पर अन्याय,
फूट डाल करेगी अत्याचार।
अपमानित भी करेगी सरकार,
लड़ाई में बरबाद होगा घर-बार।।

नाक न नीची होने देंगे,
हर मुसीबत हम झेलेंगे।
अगर कोई आँच भी आये,
उससे पहले सिर दे देंगे।।

मर जायेंगे,पर पीछे नहीं हटेंगे,
सफलता मिलने तक डटे रहेंगे।
ऐसे भी तो हम मर रहे,
चलो! कुछ करके मरें।।

जनता को बल्लभ भाई,
का नेतृत्व स्वीकार है।
उनकी अगुवाई में सब,
हर कुर्बानी को तैयार है।।

दृढ़ता, आत्मविश्वास,
जब लोगों में देखा।
सत्याग्रह का फिर,
विगुल उन्होंने फूँका।।

बापू, साबरमती से कर रहे,
बारदोली सत्याग्रह का संचालन।
कुशल नेतृत्व में कुशल सेनापति,
बल्लभ भाई, संभाले यह आंदोलन।।

इमाम साहब के हाथों से,
सत्याग्रह का श्रीगणेश हुआ।
हिन्दू–मुस्लिम साथ साथ,
मर मिटने को तैयार हुआ।।

आंदोलन को नेतृत्व मिला,
घबरा गई ब्रिटिश सरकार।
खेड़ा में मुँह की खायी,
वही यहाँ खड़ा बल्लभ भाई।।

विद्रोह दबाना प्रथम लक्ष्य था,
पर ऐसा करना आसान न था।
साम,दाम,दण्ड,भेद का किये इस्तेमाल,
सारे हथियार चले,पर हुए सारे बेकार।।

दिया प्रलोभन जनता को,
जनता ने ठुकरा दिया।
दिया प्रताड़ना जनता को,
उसने सहर्ष स्वीकार किया।।

जमीन जायदाद की बारी आयी,
नीलाम करने की योजना बनायी।
जनता ने की फिर मोर्चाबन्दी,
कोई खरीदार उन्हें मिला नहीं।।

आयातित खरीदार जब आया,
सब मिल उसे अछूत बनाया।
कौड़ी के भाव वह जमीन पाया,
जहाँ खुशियाँ नहीं,कांटा है पाया।।

डर, भय, लोभ, पीड़ा से,
लगाम लगाती रही सरकार।
प्रयासों की खिल्ली उड़ी,
कोशिशें हुयी सारी बेकार।।

जैसे जैसे जुल्म,
बढ़ाती गयी सरकार।
वैसे वैसे दृढ़प्रतिज्ञ,
होते गये पीड़ित किसान।।

बहकावे में आये नहीं,
लक्ष्य से वो डिगे नहीं।
तपकर कुंदन बनते गये,
आत्मविश्वास मजबूत होते गये।।

नहीं दिखी और कहीं,
एकता की ऐसी मिशाल।
जिसे देख चकित हुई,
गोरी, फिरंगी सरकार।।

सत्याग्रह की जली मशाल,
हिल गयी ब्रिटिश सरकार।
लौह पुरुष से टकराने में,
सारी चालें हुयी बेकार ।।

जिन हथियारों से जग जीता,
उन पर थी उनको जो नाज।
पर काम नहीं आया सब,
हताश हुयी ब्रिटिश सरकार।।

अहिंसा की चिनगारी फैली,
धूमिल हुए सारे हथियार।
सत्याग्रह के आगे सब,
डाल दिये वो अपना हथियार।।

कुशल सेनापति,
साबित हुए सरदार।
दृढ़निश्चय के आगे,
झुकी गोरी सरकार।।

बातचीत को तैयार हुयी,
लाचारी में सरकार।
सफलता मिली,
खुश हुए किसान।।

बारदोली का सफल आन्दोलन,
बापू ने किया सहर्ष स्वीकार।
बल्लभ भाई को बनाए,
बारदोली का सरदार।।

गांधीजी से संपर्क

गुजरात प्रांत है बड़ा महान्,
जहाँ जने हैं दोनों लाल।
एक महात्मा, एक सरदार,
जिनसे महका हिन्दुस्तान।।
जय गुजरात, जय गुजरात।

एक फिरंगी दूर भगाया,
एक है भारत देश बनाया।
नहीं दिखा और मिशाल,
इनसे महका हिन्दुस्तान।।
जय गुजरात, जय गुजरात।

एक सत्य,अहिंसा का पाठ पढाया,
एक विघ्न-हरण का गुर बतलाया।
हिन्दू मुस्लिम में भेद न जाना,
सबको देखे एक समान।।
जय गुजरात, जय गुजरात ।

उसर बंजर कच्छ की रण,
यही पले है दोनो लाल।
एक है सूरज, एक है चाँद,
जिनसे चमका हिन्दुस्तान।।
जय गुजरात, जय गुजरात।

जन्मस्थली एक, भाषा एक,
कार्यक्षेत्र एक, संस्कार एक।
इतनी रही समानता इनमें,
फिर क्यो न होवे ये एक।।

गुजरात के ये दोनो लाल,
इस क्षितिज पर किये कमाल।
जय गुजरात, जय गुजरात,
इनसे महका हिन्दुस्तान।।

बापू ऐसे चुम्बक थे,
हर कोई सट जाता था।
'लौहपुरुष' भला कैसे बचते,
लौह-चुम्बक का जो नाता था।।

बापू लौटे अफ्रीका से,
सत्य अहिंसा सा हथियार लिये।
रंग भेद की लड़ाई में,
वही पर थे इसका प्रयोग किये।।

देख दुर्दशा भारत जन की,
दुखी हुआ महा मानव।
ऊपर से हुकूमत विदेशी,
व्यथित हुआ 'पीड़ित मानव'।।

पर पीड़ा, अपनी पीड़ा,
फिर अपनी पीड़ा,पीड़ा नही।
पीड़ामुक्त कराने लोगो की,
दिलाने चला उनको आजादी।।

हथियार खरीद लाये अफ्रीका से,
खोज रहे थे सच्चे सेनानी।
जो चला सके उनका हथियार,
दिला सके भारत को आजादी।।

लड़ाई में जरूरी दो सामान,
कुशल सेनानी, अच्छा हथियार।
इसके लिये जरूरत धन की,
पर बापू तो ठहरे कंगाल।।

कठिन डगर हो जाये आसान,
जब इच्छाशक्ति, लगन हो पास।
शुभ कामों में आती है बाधायें,
कर्मवीर न विचलित हों न घबरायें।।

इसी खोज में योजना लेकर,
गुजरात क्लब में आते थे।
आम जन तक यह पहुँचे कैसे?
विचार प्रकट कर जाते थे।।

एक बार वही बल्लभ भाई,
खेल रहे सखा संग ताश।
बापू का भाषण जारी था,
जगा रहे सत्य अहिंसा की मशाल।।

वो खेल में इतने थे मशगूल,
दोस्तों की इच्छा को गये भूल।
लोगों का आना जाना रहता है,
भाषण से काम नहीं चलता है।।

कंकड़ छाँटने से कभी,
गेहूँ साफ नहीं होता है।
एक के परिश्रम से,
देश आजाद नहीं होता है॥

गोधरा में गुजरात अधिवेशन,
वहाँ शामिल हुए बल्लभ भाई।
महात्मा का सुन ओजस्वी भाषण,
सोचने को विवश हुए बल्लभ भाई।।

भाषण नहीं वह थी चिनगारी,
जो चिराग रोशन कर गयी।
महात्मा का कर साक्षात् दर्शन,
धन्य हो गये बल्लभ भाई।।

खेड़ा सत्याग्रह की बात उठी,
सत्याग्रही की तलाश हुई।
आगे आये बल्लभ भाई,
सच्चे सेनानी ने,
जवाबदेही स्वीकार की।।

बापू के संपर्क में आये पटेल,
खेड़ा आन्दोलन चलाए पटेल।
दृढ़ निश्चय जगा गये पटेल,
किसानों का भला कर गये पटेल।।

सरकार झुकी, नायक हुए पटेल।
हर जन के अरमान पूरे किये पटेल।।
हर दिल में घर कर गये पटेल।
सबमें आत्मविश्वास जगा गये पटेल।
सफलता का मंत्र हमें पढ़ा गये पटेल।।

नियम मानने को बाध्य हुई सरकार,
सत्य के आगे झुकी सरकार।
एक बने तो सपना हुआ साकार,
पटेल ने खेड़ा में किये चमत्कार।।

जिस सेनापति की थी तलाश,
आखिर पूरी हुई अभिलाष।
तीन माह तक साथ रखा,
एक –दूजे में विश्वास जगा।।

जो भी काम लिया हाथ में,
कुशलता से निपटान किया।
तब तक नहीं किया विश्राम,
जब तक काम न सफल हुआ।।

जहाँ बापू से,
विश्वास और स्नेह मिला ।
वही बापू को,
सेवा श्रद्धा का प्रसाद मिला।।

मणिबेन

गंगा – पुत्र गांगेय ने जब,
जाना चिंतित पिता का हाल।
स्वयं गये याचक बन कर,
दशराज के वो द्वार।।

पिता हेतु माँगी उनसे,
उनके कन्या का हाथ।
माँ बना घर ले चलूँ
अति श्रद्धा के साथ।।

पर झिझक देख दशराज की,
पूछे उनसे इसका कारण।
कारण जान स्वयं वह,
तनिक नहीं किए विचार।।

ले डाली वही प्रतिज्ञा,
त्यागा सिंहासन विचार।
फिर भी चिंता नहीं हटी,
लगा करने फिर विचार।।

राज्य त्याग का निर्णय,
सिर्फ आपका है राजकुमार।
लागू नहीं होता यह, आपके,
वंशजों पर,तनिक करें विचार।।

मेरी इच्छा यह है कि,
हो जाए अभी समाधान।
सत्यव्रती से जन्में पुत्रो का,
ही वंश चले निर्बाध।।

सुन इच्छा दशराज की,
सोच में डूब गये देवव्रत।
राजा शांतनु की इच्छा,
फिर कैसे हो साकार ।।

बहुत समझाए दशराज को,
पर बना रहा उनका संशय।
कौन उपाय फिर किया जाय,
कलंकित नहीं हो कुरुवंश।।

पिता की इच्छा की खातिर,
ली उन्होंने भीषण प्रतिज्ञा।
राजगद्दी से निष्ठावान रह,
आजीवन ब्रम्हचर्य रहूँगा।।

पिता के लिए पुत्र का त्याग,
बना पितृ भक्ति का मिशाल।
देव – गण भी चकित हुए,
सुन देवव्रत का यह बलिदान।।

भीषण प्रतिज्ञा के बदले,
इच्छायु का वरदान मिला।
पूरा जीवन भीष्मपितामह ने,
इस वचन का लाज निभाया।।

कलयुग में भी घटी है घटना,
कुछ अंतर है लिये हुए।
निःस्वार्थ भाव से काम हुआ,
बिन कोई पुरस्कार लिए।।

पाँच वर्ष की अल्पायु में,
माँ का साथ छूट गया।
तीस वर्ष की आयु में,
पिता विधुर हो गया।।

छोड़ गयी वो दो–दो लाल,
विचलित नहीं हुए सरदार।
दिल पर पत्थर रख कर,
झेल गये भीषण आघात।।

अभी उम्र भी ऐसी थी,
फिर से शादी रच जाती।
जीवन होता फिर खुशहाल,
नव वधू बगिया में खिलती।।

अबोध थे वो दोनों लाल,
भार उठाते कैसे सरदार?
प्रस्ताव भी आये कई मगर,
उन्होंने किया स्पष्ट इंकार।।

लिया वही अटल निर्णय,
आजीवन विधुर रहने की।
दोनो नयन-तारों के संग,
ठानी जिंदगी गुजारने की।।

धुन के पक्के, लगन के सच्चे,
थामे आजादी की मशाल।
इस बीच बच्चे बड़े हुए,
समुचित न हो सका देखभाल।।

सारे वैभव दे सकते थे,
ऐसी स्थिति में थे सरदार।
हर तात की होती अभिलाष,
पीला करे पुत्री का वो हाथ।।

अच्छा सा वर ढूँढ़े,
फिर करे विदाई।
बिन पुत्री सहमति,
भला कैसे हो सगाई ?

लोगों ने समझाया, कर लो शादी,
अधूरी होती है नारी, बिन शादी।
पर कंचन काया को स्वीकार नहीं,
बिन बोले सिर ना में हिलाती ।।

छोड़ी सारी माया, त्यागी शादी विचार,
पितृ सेवा पर लगायी, अपना सारा ध्यान।
जहाँ मीरा के अनमोल रत्न थे भगवान्,
वही मणि ने लिया पितृ-सेवा हेतु अवतार।।

पुत्री का रहा अटल निर्णय,
आजीवन अविवाहित रहने की।
पूरा जीवन पितृ - सेवा में,
समर्पित करने की ठानी।।

आजादी का अमर पुजारी,
रोग ग्रसित भी रहता था।
कब्ज बिमारी, पेट पीड़ा,
रोड़ा बन आ जाता था ।।

पर नीलकंठ सा उसे दबाए,
हर कार्य सदा कर जाते थे।
बिन बोले पीड़ा पढ़ती उनकी,
तुरंत उपचार में जुट जाती।।

पिता की सेवा में पड़े विघ्न,
मणि बहन को बर्दास्त नही।
श्रवण कुमार की तरह वह,
बस पितृ सेवा करती गयी।।

हर क्षण पिता की करती देखभाल,
पितृ सेवा की प्रस्तुत की मिशाल।
पिता को मिले आराम, कोई चाह नहीं दूजा,
निष्कंटक करें देश सेवा,काम नहीं कोई दूजा।।

मिली आजादी, पूरा अरमान हुआ,
अखंड भारत का सपना टूट गया।
जब भारत का दो- दो फाक हुआ,
एक पाक, दूजा हिन्दुस्तान हुआ ।।

कौन बड़ा कौन है छोटा,
अभी कहना आसान न था।
अंग्रेजों ने चाल चली,
कुछ और शरारत है ठानी।।

भारत को दो भागो में बाँट दिया,
देशी रियासतों को भी आजाद किया।
वो मिले भारत या पाकिस्तान में,
या स्वतंत्र निर्णय ले रहे आजाद से।।

रियासतों के विलय का जिम्मा,
सरदार के कंधों पर आया।
सहृदयता के साथ नई,
जिम्मेदारी को स्वीकार किया।।

रियासतों को एक करना,
कोई आसान कार्य न था।
समय कम, काम अधिक था,
उपर से पाकिस्तान जुगत था ।।

समयबद्ध योजना के साथ,
थामा इनके विलय का काम।
गतानुभवों का लाभ लिया,
देशी रियासतों से संपर्क किया।।

साढे पाँच सौ मोतियों की माला,
बनाने की उन्होंने है ठानी।
निर्धारित समय के भीतर,
एक मजबूत माला बना डाली।।

पड़ने न पाये बाधा विघ्न,
रचनाकार ने जो लक्ष्य रखा।
ऐसे में मणि बहन ने,
हर क्षण पिता का ध्यान रखा।।

एक तरफ से निश्चिंत हो,
समर रथ आगे बढ़ाया।
दिन रात एक कर,
इसे मंजिल तक पहुँचाया।।

हुआ नव निर्माण भारत का,
शिल्पी का सपना साकार हुआ।
दुनिया के आगे वह,
अद्भुत मिशाल पेश किया।।

पितृ सेवा का व्रत लिए,
साये की तरह चिपकी रही।
हर पल उनका ध्यान रखा,
रोग, काम पर नहीं पड़ा भारी।।

चाह नहीं पद लालसा,
या फिर कोई इनाम मिले।
चाह रही बस एक,
रोगी पिता को आराम मिले।।

बिना स्वार्थ देश सेवा की,
कम ही मिलती है मिशाल।
पिता-पुत्री का यह बलिदान,
नही भूलेगा कभी हिन्दुस्तान।।

अखण्ड भारत की तैयारी

लोगों की प्रबल आकांक्षा,
भारत एक अखण्ड रहे।
पर विधान बन रहा ऐसा,
भारत के टुकड़े हैं हो रहे।।

महान् शिल्पकार ने, इन
सब पर पैनी नजर रखी।
कैसे रहे अखण्ड भारत,
इसकी तैयारी कर डाली।।

बात चली आजादी की,
देशी राज्य बने रोड़ा।
राजाओं को भी अपना,
राज काज का लालच आया।।

नव भारत के निर्माण में,
प्रजातंत्र आधार बनी।
पर यहाँ के राजे महराजे,
ऐसा करने को तैयार नहीं।।

चाह रहा भारत में मिलना,
अपना स्वतंत्र अधिकार लिये।
पर भारत की मांग रही,
प्रजा को शासनाधिकार मिले।।

देशी राज्य अपनी जनता को,
दें उत्तरदायी शासनाधिकार।
ब्रिटिश सरकार को इसमें,
भला क्यों होवे कोई एतराज?

बापू से अमोघ अस्त्र ले,
तानी सरदार ने फिर कमान।
कुशलता,धैर्य, शीघ्र,संयम से,
चलाया एक नया अभियान।।

देशी राज्यों की जनता अब,
करने लगी नरेशों से मांग।
उसें अपना राज्य चलाने,
का मिले संपूर्ण अधिकार।।

राज प्रजा और भारत प्रजा की,
अब मांग में आया संतुलन।
नयी ताकत बन जनता उभरी,
परिणाम हुआ अति सुन्दर।।

स्थानीय राजनीति के चाणक्य बने,
देशी राज्यों को पहचान लिये।
ज्ञानवान, ताकतवर, लोक नेताओं से,
अपना सम्बन्ध प्रगाढ़ किए।।

अंदर, बाहर की स्थिति से,
भली भांति परिचित हुए।
दोषों, कमियों, शक्तियों को,
भली भाँति वो परख लिए।।

विभाजन और आजादी

मिले आजादी, जंग लड़ी,
नहीं चले, इनकी मनमानी।
न हिंदू लड़ा, न मुस्लिम लड़ा,
भारत माँ का हर सपूत है लड़ा।।

लगन, तपस्या, त्याग के आगे,
नत मस्तक हुई फिरंगी सरकार।
शासन करना भारत पर,
होने लगा अब दुश्वार।।

पर छोड़ें कैसे सोने की चिड़ियाँ,
यह लोभ हमेशा रहा सालता।
कैसे हो इससे मोह भंग,
कैसे पाए उचित समाधान ?

एकजुटता इनकी,
फिरंगी को नही भाया।
इन्हें तोड़ने का अब,
है वह मन बनाया।।

इन्हें मिले यदि खंडित आजादी,
आपस में ये रहेंगे लड़ते।
शासन नहीं चला पाए यदि,
वापस इसे चलाने आ जायेंगे।।

कांग्रेस को अवैध बनाया,
नेताओं को जेल भिजवाया।
अच्छा मौका हाथ में आया,
उसने उसको खूब भुनाया।।

मुस्लिम लीग को आगे बढ़ाया,
साम्प्रदायिक बीज गहराई से बोया।
मुस्लिम लीग अड़ी बंटवारे पर,
नही कोई समझौता इससे कम पर।।

पहले लड़े देश के लिए,
अब लड़े बँटवारे के लिए।
पहले जहाँ ६३ सा प्रेम था,
फिरंगी भी थर्रा जाते थे।।

वहीं अब ३६ सा हो गया,
फिरंगी अब मुस्कराते हैं।
फूट से हम कमजोर हो गये,
एक-दूजे के विश्वास से गये।।

जहाँ दोनों खून मिल,
एक हो जाते थे।
आज वही खून,
एक-दूजे के प्यासे थे।।

अहिंसा एक मिसाल बनी,
भारत की आजादी में।
हिंसा भी नृत्य कर गयी,
भारत के बँटवारे में।।

बिहार, बंगाल,
सिंध, पंजाब।
दिल्ली, यू पी,
महाराष्ट्र, राजस्थान।।

खून की नदियाँ बहीं,
भारत खून से रंग गया।
आजादी मिलन की खुशी में,
अच्छा खासा ग्रहण लग गया।।

मानवता सिसकती रह गयी,
दानवता का नर्तन होता रहा।
लाखों जन बेघर-बार हुए,
अरमान दिलों का टूट गया।।

गांधी जी के नेतृत्व में,
आन्दोलन जो है चला।
उसके कारण अंग्रेजों को,
भारत देश छोड़ना पड़ा।।

लेकिन जाते जाते वो,
माँ के टुकड़े कर गये।
इससे भी पेट नहीं भरा
रियासतें भी आजाद कर गये।।

वो रहे भारत या पाक के साथ,
ऐसे निर्णय का अधिकार दे गये।
दोनों मजहबों के बीच,
फूट का वो बीज बो गये।।

'भारत बँटे नहीं' की इच्छा,
मन में धरी की धरी रह गयी।
सारे प्रयत्न फेल हुए,
मुस्लिम लीग अड़ी रही।।

पैनी नजर सरदार की,
भांप गयी फिरंगी मंशा।
भारत के टुकड़े करना,
और बदलना इसका नक्शा।।

छोटे से छोटे अंगों से,
हर जीव मुहब्बत करता है।
घायल यदि वह हो जाए,
उपचार तुरंत ही करता है।।

आँच अगर जीवन पर आए,
तनिक नहीं घबराता है।
लेता तब अहं निर्णय,
झट काट फेंक जाता है।।

छोटा सा टुकड़ा हटाकर,
शरीर बचा लेता हैं।
थोड़ी सी पीड़ा सहकर,
जीवन सुखमय कर लेता है।।

कुछ ऐसा ही हाल बना,
अपने वतन भारत का।
जब बात चला,
इसके बँटवारे का।।

इनको अगर दिया समय,
और दिया मनन का मौका।
समूचा भारत पाकिस्तान में,
मिलाने से नहीं चूकेगा।।

लिया पक्ष बँटवारे का,
बिना लगाव छुपाव के।
निर्णय अपना भी सुनाया,
बिना लाग लपेट के।।

भारत का हुआ विभाजन,
खण्डित आजादी मिली।
राजनीतिक निर्ममता में,
बदली धरा भूगोल मिली।।

तीन टुकड़ों में हुआ,
भारत देश का बँटवारा।
एक भारत, दूजा पाक,
तीजा–नरेशों का जमावड़ा।।

उनको विधिसम्मत ये छूट मिली,
निर्णय लें वो अपने सम्मान का।
रहें भारत या पाकिस्तान में,
या रहें स्वयं स्वतंत्र बिन बाधा ।।

अंग्रेजों की कुटिल मंशा,
भाँप गये थे सरदार।
मुस्लिम लीग के साथ मिल,
करने तुले भारत का बंटाधार।।

समुद्रमंथन हो चुका,
निकल रहा जो हलाहल।
उसी में ही खोजना होगा,
मधुर ग्राह्य अमृत रस।।

नहीं हुआ अगर बँटवारा,
छिन्न भिन्न हो जाएगा भारत।
हाथ मलते सब रह जायेंगे,
हाथ से निकल जाएगा सम्पूर्ण भारत।।

स्वाधीनता के समय पर,
साम्प्रदायिकता की जो आग लगी।
साथ साथ रह रहे पड़ोसियों में,
नफरत की आग बही।।

जगी थी जीवन में आशा,
नया सबेरा आएगा।
आजादी की पहली किरण में,
सारा जहाँ जगमगाएगा।।

कांटे नहीं फूल खिलेंगे,
टूटेगी गुलामी की जंजीर।
आजाद भारत में फिर,
बदलेगी अपनी फूटी तकदीर।।

ताजे हवा के झोंकों से,
चमन में नया फूल खिलेगा।
अनिश्चितता के बादल छटेंगे,
सुख दुःख अपना होगा।।

करना होगा नवनिर्माण,
अपने चमन का अपने हाथ।
हिम्मत अभी घटी नही,
सब मिल करेंगे विकास।।

आजादी के बाद बँटवारे ने,
नया तूफान पैदा किया।
सदियों से जमे लोगों को,
उजड़ने पर मजबूर किया।।

जो एक दूजे के काम आते थे,
आज वही खून के प्यासे थे।
स्वतंत्रतांदोलन में उतने मरे नहीं,
जितने मर रहे बटवारे में।।

आजादी की लड़ाई में,
सत्य अहिंसा की विजय हुई।
पर इसके बँटवारे में,
इसकी अपूरणीय क्षति हुई।।

घर द्वार छोड़ें कैसे?
जहाँ रह रहें सदियो से।
यह कैसी आजादी है,
जो घर छोड़ने पर मजबूर करे।।

पीढ़ियों से जहाँ प्रेम बह रहा,
सब रहते थे साथ साथ।
आज वही खून खौल रहा,
व्यवस्था हो गयी तार तार।।

धन लुटा, दौलत लुटा,
लुट रही बहनों की लाज।
जीवन भी अब क्या जीना?
जब नहीं बची जीवन की लाज।।

क्षणभंगुर सी घटना यह,
तोड़ गयी सदियों का विश्वास।
वातावरण प्रदूषित हो गया,
छूट रहा सदियों का साथ।।

लाखों की सम्पत्ति छोड़ कर,
लोग भाग रहे इधर उधर।
जीवन रक्षा कैसे हो?
दर दर खा रहे ठोकर।।

इज्जत आवरू की चिंता,
व्यवस्थित करना उनका घर।
अचानक आयी इस चुनौती से,
कैसे निपटे नवगठित सरकार?

संतोषजनक हो समाधान,
इसके लिये चिंतित थे सरदार।
अब तक की भीषणतम समस्या ,
से रूबरु हो रहे थे सरदार।।

एक समस्या और खड़ी थी,
समय रहते सुलझाना था।
देशी राज्यों को संघ में मिला,
अखण्ड भारत बनाना था।।

कुशलता, चतुराई,उदार प्रेम से,
हल निकालना आवश्यक था।
क्योंकि इधर पाकिस्तान भी,
अपने साथ लेने को आतुर था।।

मुस्लिम राज्य जुड़ें पाक से,
इस पर उसने अधिकार जताया।
पड़ोसी हिंदू राज्य भी जुड़ें हमसे,
इन पर प्रलोभन का जाल बिछाया।।

साथ मिलाने का इन सबको,
पाकिस्तान किया जी तोड़ प्रयत्न।
भारत कैसे मूकदर्शक बनता,
जब पास था उनके बल्लभ रत्न।।

देशी राज्य सीमायें होगी अबदल,
रहेंगे स्वयं वो अपने में स्वतंत्र।
अपने सीमा के भीतर ही,
देखेंगे वो अपना राज्य प्रबन्ध।।

कांग्रेस ने भी दिया वचन,
सत्ता,सीमा रहेगी यथावत्।
बिन राजा के अनुमति,
नहीं होगा कोई परिवर्तन ।।

कुछ नरेशों ने की घोषणायें,
वो साथ न होंगे भारत पाक।
अपना राज काज चलायेंगे,
स्वयं रखेंगे अपने अधिकार।।

सर्व सत्ताधीश राज्य की मंशा,
रही इन कुछ नरेशों की।
ऐसे में उठी फिर शंका,
भारत अखंड निर्माण की।।

नरेशों से ज्यादा फजीहत,
दिखी वहाँ प्रजाजन की।
जायें कैसे दिल्ली से मैसूर,
जहाँ सीमायें हों कई राज्य की।।

डाक- तार, रेल व्यवस्था,
फैली है पूरे वतन में।
हो खण्ड विभाजन कैसे?
और दौड़ें अपने राज्य में।।

प्रजा का व्यवहार भी,
एक राज्य तक बँधा न था।
विदेशों से व्यवहार भी,
केन्द्र के ही अधीन था।।

राज्य जुड़ें भारत या पाक में,
यही प्रजा के हित में था।
बलवान राज्य भी इसे,
स्वीकारने को विवश था।।

देशी राज्यों का हिस्सा,
होता पूरा चालीस फीसद।
यदि यही अलग हो जाये,
कैसे खड़ा होगा अखंड भारत ?

सदियों लड़ाई के बाद मिली,
अजादी कैसे बरकरार रहे?
लड़ाई लड़ी गयी भारत के लिये,
न कि अपने अपने राज्य लिये।।

यदि कुछ किया नहीं गया,
सब धूल धूसरित हो जायेगा।
टुकड़ों में मिलेगी आजादी,
मेहनत पर पानी फिर जायेगा।।

o

देशी राज्यों के उचित जगह हेतु,
स्टेट डिपार्टमेंट की हुई स्थापना।
अध्यक्ष बने लार्ड माउन्टबेटन,
मसौदा निर्माण भार मेनन को सौंपा।।

बनाये एक डिपार्टमेंट मंत्री दोनों,
गहन मंथन फिर हुआ फैसला।
अब्दुरब निस्तर पाक से आये,
जवाहर ने सरदार नाम बताया।।

सरदार ने जिम्मेदारी स्वीकारी,
फिर चिंतन मनन में लग गये।
सपना, निर्माण नवभारत का,
मंजिल तक अब कैसे पहुँचें?

लगे ढूँढ़ने सच्चा साथी,
जो हरदम उनके साथ रहे।
अर्जुन संग जैसे मधुसूदन,
महाभारत में विराजमान रहे।।

मानव शक्ति परख में माहिर,
भला यहाँ कैसे चूक करे?
असल परीक्षा की आयी घड़ी,
इसमें भला क्यों चूक करे?

हीरे को तो पहचान लिये,
पर इच्छा उनकी भी चाही।
मेनन को ही स्टेट डिपार्टमेंट,
के सचिव, बनाने की ठानी।।

पर वृद्ध मेनन की रही इच्छा,
सेवानिवृत हो करू आराम।
भारत को मिल गयी आजादी,
शुभ अवसर है करू सेवा विराम।।

सरदार को यह मंजूर नहीं,
सच्ची सेवा तो अब होनी है।
भारत माँ का उचित श्रृंगार,
अपने हाथों अब करनी है।।

अभी किए अगर आराम,
सपना अधूरा रह जाएगा।
भारत निर्माण का उचित अवसर,
आखिर हाथ से निकल जाएगा।।

करनी होगी कठिन तपस्या,
समय नही हमारे पास।
घात लगाये बैठा दुश्मन,
कैसे करे हम आराम?

अंग्रेजो ने फूट डाल राज किया,
अवसर मिला है लाभ उठाइए।
आपस में उलझ रहे नरेशो के,
फूट में लूट का लाभ उठाइए।।

भारत माँ के नव निर्माण में,
छोटा सा आग्रह मान जाइए।
सेवा विराम का विचार त्याग,
नव उत्साह से जुट जाइए।।

इस समय आराम हराम,
अभी आजादी कहाँ मिली?
भँवर में फँसे जहाज को।
मंजिल तक है पहुँचानी।।

सरदार की इच्छा के आगे,
नतमस्तक हुए वी. पी. मेनन।
दोनों बूढ़ों ने ली कसम,
मिलायेंगे वो कदम से कदम।।

फिर हुआ द्वन्द दोनो देशो में,
खींचा तानी चली जोरों पर।
रजवाड़ो के भाग्य खुल गये,
करने लगे फिर तौल मोल।।

बनासकांठा में विफल पाकिस्तान,
जोधपुर, जैसलमेर पर डोरे डाले।
जिन्ना ने फेंका माया जाल,
दोनों के पास बुलावा भेज दिये।।

कोरे कागज पर कर हस्ताक्षर,
जिन्ना ने फिर प्रस्ताव रखा।
जो भी शर्तें होंगी, सब होगी पूरी,
विलम्ब इसमें जरा भी नहीं होगा।।

इतने बड़े लालच के आगे,
हानि-लाभ में फँस गये दोनों।
और अधिक आश्वासन में,
आगे बढ़े निःसंकोच दोनों।।

जैसलमेर युवराज ने रखी शर्त,
यदि हुआ हिंदू-मुस्लिम में द्वन्द।
रहेंगे हिन्दुओं के साथ हम,
इससे कभी न डिगेंगे हम।।

टालमटोल भरा जिन्ना का निर्णय,
चौकन्ने हो गये दोनों रजवाड़े।
नहीं लिये फिर कोई निर्णय,
लौट कर दोनों घर को आये।।

पाक की हर चाल पर,
रख दिये जब अपना दांव।
लगा छटपटाने हर जगह,
नहीं पसार सका अपना पांव।।

०

हम सब भारत माँ की संतान,
हम सबकी बने एक पहचान।
आयें सब मिल बैठें साथ,
सबके हित पर करें विचार।।

एक-दूजे के हित-साधन में,
मिल बैठ ढूंढ़ें समाधान।
नहीं चाहते प्रभुत्व जमाना,
नहीं होगा इससे कल्याण।।

भारत माँ के इतिहास में ऐसा,
संकट पहली बार है आया।
सब मिल कर करें पुरुषार्थ,
संकट हटे,जो हम पर है छाया।।

तीन विषयों पर प्रकाश डाला,
पहला रखा राष्ट्रीय सुरक्षा।
इतिहास पलट कर यदि देखे,
चिंता सदा रही राष्ट्र-सुरक्षा।

बाहरी, फूट का लाभ उठाते,
जब हम आपस में लड़ते थे।
चैन सुख सब हर लेते,
हम गुलाम हो जाते थे।।

बिना भारतीय संघ सहयोग,
कैसे संभव राज्य सुरक्षा?
छोटे-छोटे राज्यों में अब,
संभव नहीं स्वयं राज-रक्षा।।

एक बहुत बड़ी चिंता से,
सबको मुक्ति मिलेगा।
देश रक्षा का भार जब,
भारतीय संघ वहन करेगा।।

विदेशों के साथ राज्यों ने,
नहीं किया अभी तक व्यवहार।
अभी तक यह सब,
करती रही ब्रिटिश सरकार।।

छोटे- छोटे राज्यों को,
इनमें आएगी कठिनाई।
अनुभव, सूझबूझ की कमी,
हरदम देगी पड़ी दिखाई।।

इस गुरूत्तर दायित्व को,
भारत संघ लेने को है तैयार।
आर्थिक जिम्मेदारी की,
नहीं पड़ेगी उन पर भार।।

तीसरा विषय आंतरिक व्यवहार,
कम महत्व का नहीं था यह विचार।
कुछ भौगोलिक विवशता है ऐसी,
सब नहीं छोड़ सकते व्यवहार।।

नहीं संभव रेल विभाजन,
जो फैली भारत भर में।
डाक-तार व्यवस्था भी ऐसी,
जो पहुँच रही जन जन के घर में।।

देख तपस्या भाई बल्लभ की,
माउंटबेटन भी आगे आये।
दिया विचार रजवाड़ों को,
वो भारत या पाक में मिल जायें।।

आजादी की तिथि से पहले,
जुड़ जायें किसी एक से।
पर भौगोलिक मर्यादायें ऐसी,
जिनकी अनदेखी नहीं कर सकते।।

भारतीय संघ प्रदेशों में,
जुड़े अनेकों देशी राज्य।
ऐसे में मिलना इसमें,
राजा–प्रजा का है कल्याण।

सरदार की सीधी सपाट बातें,
उपर से ममतापूर्ण व्यवहार।
संघ के प्रति ममता और प्रेम,
सही. यही जनता की मांग।।

जगी फिर आशा की मशाल,
दूर हुआ अमावसी अंधकार।
लाखों में जगी एक नयी आस,
आयी फिर भारत में नव प्रभात।।

त्रावणकोर

त्रावणकोर का अकड़ूँ दीवान,
संघ में मिलने से किया इंकार।
खिलाफ इसके,जनता ने मोर्चा खोला,
क्योंकि वह मिलने को थी तैयार।।

शासक विरुद्ध कर दी करबन्दी,
लड़ाई हेतु हो गयी तैयार।
करार की एक प्रति लेकर,
सरदार ने फिर की राजा से बात।।

अकड़ूँ दीवान,जनता का गुस्सा,
नहीं संभल रहे थे हालात।
हालात देख,महराज लिए निर्णय,
किये फिर करार पर हस्ताक्षर।।

इस प्रकार त्रावणकोर की,
विकट समस्या हल हो गयी।
अब वह भारतीय संघ की,
अमिट हिस्सा बन गयी।।

भोपाल, इंदौर

इलाके का कर रहे,
नवाब नेतृत्व प्रेम से।
नहीं चाहते थे नवाब,
वह जुड़ें भारत-पाक से।।

रहे राज्य उनका स्वतंत्र,
चले बिना कोई बाधा के।
औरों का भी साथ रहा,
जुड़े दुगने उत्साह से।।

अधिकतर राज्य जुड़ चुके,
महा भारतीय संघ में।
कठिन हो गया आजाद रहना,
इनसे अब अलग हट कर के।।

लिखा पत्र सरदार को,
बिना कोई व्यवधान के।
कोई राह दीखै नहि दूजा,
अस्तित्व रक्षा, इससे हट के।।

हर संभव प्रयत्न किया,
स्वतंत्रता और तटस्थता की।
नहीं दिखी दूर- दूर तक,
चिनगारी, इसके रक्षा की।।

परेशान किया आपको,
हार अपनी मानता हूँ।
भारतीय संघ के गले में,
हार अपनी डालता हूँ।।

पहले जहाँ विरोधी था,
वही अब वफादार हूँ।
देश की एकता के लिये,
हर कुर्बानी को तैयार हूँ।।

सरदार का प्रेम संदेश आया,
संघ से जुड़ने का जो है मन बनाया ।
आपकी भावना का कद्र करता हूँ,
आपके अनुरोध को स्वीकार करता हूँ।।

इसमें न हमारी जीत है,
न ही है आपकी हार।
खुशी हुई, आप भी,
भारत-निर्माण को है तैयार।।

जाति धर्म का भेद भुलाकर,
आपने जो प्रकट किये उद्गार।
नहीं भूलेगा कभी,
उसको हमारा हिन्दुस्तान।।

जो सच्चा और उचित था,
बस उसी की जीत है।
गंभीरतापूर्वक समझ लिए,
क्या नहीं यह काम है ?

नवाब की राह पर लौटे,
इंदौर और अन्य नरेश।
चले स्वयं को मिलाने,
भारतीय महासंघ में।।

❀❀❀

जूनागढ़

सौराष्ट्र क्षेत्र का जूनागढ़,
नहीं था मिलने को तैयार।
भारतीय संघ की नीति नहीं थी,
डाले उन पर जोर दबाव।।

जैनियों का पूज्य तीर्थ यही,
हिंदुओं का है तीरथ धाम।
हिंदू भी यहाँ कम नहीं,
विराजमान यहीं गिरिनार।।

श्रीकृष्ण का देहोत्सर्ग हुआ,
यहीं ज्योर्तिलिंग सोमनाथ।
गिरिनार में मौजूद यही,
सम्राट अशोक शिला लाट।।

करांची, अरब सागर में,
तीन सौ मील था दूर।
बोरावल, हिंद महासागर में,
कैसे रखते आपस में मेल।।

रेल–डाक का जाल बिछा,
चहुँओर खड़ा भारत संघ।
फिर भी पाकिस्तान से जुड़े,
नहीं स्थिति में था जूनागढ़ ।।

जूनागढ़ पाकिस्तान को देने,
नवाब ने बनाया अपना मन।
नवाब पर सवार कौमवाद,
पाक में मिलने का पागलपन ।।

दीवान बने शाहनवाज भुट्टो,
जो कट्टर लीग समर्थक थे।
नवाब साहब,इच्छा–अनिच्छा से,
दीवान के कठपुतली बन गये ।।

बहुसंख्यक हिन्दुओं ने,
नवाब से मिल,विचार बताया।
स्वयं को भारतीय संघ में,
मिलने का आग्रह दोहराया ।।

अगर नहीं हुआ ऐसा,
मुसीबतें खड़ी हो जायेंगी।
राज्य का नुकसान होगा,
व्यवस्था चरमरा जायेगी।।

भुट्टो को यह रास न आया,
उसके मन में लालच था छाया।
जूनागढ़ को पाक में मिलाने का,
उस पर जुनून था छाया।।

बुरी खबर सुनकर सरदार,
मेनन को जूनागढ़ भेजे।
नहीं मिलने दिया नवाब से,
बीच में उन्हें रखा उलझाये।।

मेनन ताड़ गये भुट्टो की मंशा,
आगे बढ़ माणाबदर पहुँचे।
वहाँ खान को गिनायी मुसीबतें,
जो जुड़ गया था पाकिस्तान से।।

परेशानियों को ले,
करांची फोन घुमाया ।
पर करांची ने उसे,
फिर मना लिया।।

पहले मेनन की बात,
था वह मान लिया।
पर अगले दिन ही,
मिलने से मुकर गया।।

मानाबदर की जनता में,
फैल रहा घोर असंतोष।
अगर कदम नहीं उठाया,
प्रभावित होंगे आस-पड़ोस।।

वावरिया वाड़, मंगलोर,
जूनागढ़ के ही अधीन थे।
दोनों स्वयं को आजाद कर,
भारत संघ से जुड़ गये।।

जूनागढ़ ने फौजें भेजीं,
वावरिया में किया आक्रमण।
वावरिया पर यह नहीं,
यह था भारत पर आक्रमण।।

दो देशों के बीच,
युद्ध की नौबत आयी।
कुछ ने संयुक्त राष्ट्र,
संघ की राह सुझायी ।।

सरदार ने दृढ़ता से,
स्पष्ट किया इंकार।
बरियावाड़ की रक्षा,
हेतु सेना हुयी तैयार।।

व्यापारियों को नहीं मिली,
जान-माल की उचित सुरक्षा।
व्यापार वहाँ करने से,
कर दिया स्पष्ट इंकार।।

अन्न की तंगी हो गयी,
मच गया हा-हाकार।
इस तरह वहाँ फिर,
बिगड़ने लगे हालात।।

पाकिस्तान से थोड़ी बहुत,
खाद्य सामग्री है आयी।
परन्तु सारी जनता की,
वह पेट नहीं भर पायी।।

नवाब की सारी चालें,
उलटी पड़ी दिखायी।
सही सलामती पर उनके,
चिंता की रेखा पड़ी दिखायी।।

नवाब जूनागढ़ छोड़ने का,
लिया फैसला एकतरफा।
बीबी बच्चों के साथ,
करांची वह भाग गया।।

करांची से ही कर रहा,
जूनागढ़ का वह संचालन।
अंधा धुंधी फैली चहुँओर,
जल रहा है जूनागढ़।।

भुट्टो घबराया, हिम्मत हारा,
जिन्ना को हकीकत बतलाया।
सूझ सका न कोई रास्ता,
सारा दबाव नवाब पर डाला।।

परिस्थितियों पर नजर रख,
नवाब ने छोड़ा भुट्टो पर भार।
कौंसिल को जैसा उचित लगे,
कर ले भली - भांति विचार।।

कौंसिल ने लिया फैसला,
बाहरी अनिष्ट से बचा जाये।
विवादित प्रदेशों का अधिकार,
भारतीय प्रतिनिधि को सौंपा जाये।।

तैयार मसविदा लेकर मेनन,
पहुँचे बल्लभ भाई के पास।
मसविदे में सरदार को,
पड़ी दिखायी एक फांस।।

पत्र में लिखा मौजूद था,
प्रजा का मत लेना होगा।
ताड़ गये विरोधी मंशा,
दिलाये नहीं कोई भरोसा।।

सरदार गरजे,
नवाब है भाग गया।
जूनागढ़ का है,
भाग्य फूट गया।।

नवाब की विपन्न राजव्यवस्था,
डावां डोल अब हो रही।
सारे हथकंडे अपना डाले,
सब के सब धरी रही।।

विकट परिस्थिति देख सामने,
नया चाल वह चल. रहा।
चाह रहा कुछ मौका और,
जनमत का पासा फेंक रहा ।।

अधिसंख्य आबादी हिंदू की,
चाहत उनकी मिले संघ में।
जनमत ऐसे में आवश्यक नहीं,
जब हवा बह रही पक्ष में।।

बेकाबू होते देख हालात,
भुट्टो ने फिर सत्ता सौंपी।
भारी मन से की व्यवस्था,
पहुँच गये वापस करांची।।

रेतीली बुनियाद पर,
महल नही बना करते।
पानी के बुलबुले,
ज्यादा देर टिका नहीं करते।।

जूनागढ़ ने ही सौराष्ट्र का,
अब इतिहास दिया बदल।
भारत संघ में मिलने का,
हुआ जब पहल।।

अकुशल नेतृत्व,
अनीतिपूर्ण व्यवहार।
बिन आधार के कोशिश,
गया एक और बेकार।।

मुँह से निवाला,
छिन गया।
पाकिस्तान वहीं,
तिलमिला गया।।

हिंदू धर्म का प्रमुख धाम,
हिंदुस्तान में मिल गया।
सरदार का कुशल नेतृत्व,
यहाँ भी काम कर गया।।

❀❀❀

हैदराबाद

मार्ग में आती बाधायें,
कर्मवीर डरते नहीं।
बाधाओं के बीच जूझ,
ढूढ़ लेते मार्ग सही।।

काम कितना ही कठिन हो,
लेते उसे सहज भाव से।
गंभीरता से कर विचार,
मंजिल तक पहुँचाते उसे।।

देशी में सबसे बड़ा,
राज्य हैदराबाद था।
निजाम का जूता भी जहाँ,
स्वयं में रखता भाव था।।

भारत का यह हृदय प्रांत,
चहुँओर घिरा भारतीय संघ प्रांत से।
उत्तर में मध्य, पश्चिम में बंबई,
पूर्व उड़ीसा, दक्षिण जुड़ा मद्रास से।।

थे पचासी हिंदू आबादी,
पर निजाम का राज था।
आजादी के अहं युद्ध में,
इनका भी अमूल्य योगदान था।।

अखण्ड भारत की रचना का,
जो बीड़ा सरदार ने उठाया।
हैदराबादी निजाम ने उसमें,
सबसे बड़ा रोड़ा लगाया।।

रटता रहा शुरु से,
हम नहीं जुड़ेगे दोनों से।
ब्रिटिश राज्य के तहत,
रहेगे स्वतंत्र भाव से।।

पर सुन ब्रिटिश सरकार की,
स्पष्ट नीतिगत वाणी।
अलग से देशी राज्यों को,
नहीं देगी वह आजादी ।।

जुड़ना होगा ही सभी को,
भारत या पाकिस्तान में।
चुनने की आजादी है बस,
वो जुड़ें भारत या पाक से।।

हैदराबाद कोई अलग नहीं,
जिसके लिये कोई नीति बने।
ब्रिटिश साम्राज्य ने केवल,
दो ही राष्ट्र स्वीकार किये।।

भौगोलिक परिधान है ऐसा,
भारत से जुड़ना हितकर होगा।
पर निजाम का था सपना,
पाकिस्तान में वह अच्छा होगा।।

प्रजा की इच्छा भारत में मिलें,
इस हेतु एकीकरण दिवस मनाया।
परिणाम हुआ अति बदतर,
जब पुलिस ने कहर बरपाया।।

विदेशी राज्य और राज्य रक्षा,
का हो अधिकार हमारे पास।
सरदार इसे ठुकरा दिये,
निजाम जब रखे यह प्रस्ताव।।

कठिन परिश्रम किये गये,
चर्चाओं का दौर चला।
एक वर्ष के लिये किसी तरह,
समझौता स्वीकार हुआ।।

रक्षा,विदेश,आंतरिक व्यवहार,
निजाम करे इसे स्वीकार।
आगे होगा फिर चिंतन मनन,
मेनन ने किया मसौदा तैयार।।

एक वर्ष के लिये होगी शांति,
अगर कर ले मसौदा तैयार।
निजाम के अब उपर था,
इसके अमल का दारोमदार।।

इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी,
आपस में सब मिले हुए।
फिर भी रह रहे स्वतंत्र,
बिना किसी बाधा के।।

पर ऐसा नहीं हमारे यहाँ,
लड़ते रहे सदा आपस में।
गुलाम बनें या बनायें,
इसी में बस उलझ रहे।।

अगर युद्ध हुआ भारत से,
दो दिन भी टिक नही सकेंगे।
दूसरों से अच्छे अवसर मिलें,
भला इसका क्यो विरोध करें?

कुछ शर्तें और लगायी,
किसी तरह हुआ करार।
निजाम भी अंततः,
हस्ताक्षर को हुए तैयार।।

तत्कालीन भारत की,
स्थिति थी गम्भीर।
सुलग रहा था,
उस समय कश्मीर।।

नेताओं में आपस में,
फूट पड़ी गम्भीर।
देख दुर्दशा भारत की,
निजाम बने गम्भीर।।

देख स्थिति भारत की,
असमंजस में पड़े निजाम।
बातें सुन रजाकार कासिम की,
पलट गये फिर निजाम।।

गाँव घरों में मच रहा हा-हाकार,
रजाकारों ने मचाया है अत्याचार।
मानो वहाँ पर चलने लगी,
पाकिस्तान की कठपुतली सरकार।।

साम्प्रदायिकता के आरोपों,
से थे परेशान सरदार।
लार्ड माउंटबेटन के उपर,
डाले थे हैदराबाद का भार।।

भारतीय गांवों तक में फैला,
रजाकारों का अत्याचार।
बीच - बीच में निजाम भी,
करने लगे भारत का अपमान।।

भारत जन की देख दुर्दशा,
फिर गरज उठे सरदार।
विकट स्थिति में दिल्ली आकर,
पकड़ी अपने हाथ कमान।।

मेनन जी से समझ लिये,
वहाँ के अब तक के हालात।
नेहरु, राजाजी की सम्मति से,
सेना भेजने पर किए विचार।।

मद्रास, मध्य, बम्बई प्रांत,
के गांवों की हो सके रक्षा।।
मिलते ही आदेश,
सैनिक दल कूच किया।

रजाकारों ने विरोध किया,
ली भारत सेना से टक्कर।
उन्हें करारा जवाब मिला,
लालसा हो गयी रफूचक्कर।।

उलटा पड़ता दाँव देख,
निजाम ने फिर चाल चली।
संयुक्त राष्ट्र में उसने,
अपनी शिकायत दर्ज की।।

अंततः निजाम स्वीकार कर पराजय,
हैदराबाद, भारत को देने की बात कही।
संयुक्त राष्ट्र में दर्ज विरोंध की वापसी,
हेतु सुरक्षा परिषद में अपील रखी।।

एक विकट समस्या का,
सुखद पटाक्षेप हुआ।
सरदार का एक और प्रयास,
यहाँ भी सफल रहा।।

भारत माँ के लाल ने,
रखी भारत माँ की लाज।
खून पसीना एक कर,
मिला लिया हैदराबाद।।

पूरी हुई प्रजा की मुराद,
जिसने सहे थे अत्याचार।
आजादी की लड़ाई में,
जो सपने देखे, हुए साकार।।

कश्मीर

भारत का सरताज हिमालय,
जिसमें नगीना कश्मीर है।
स्वर्ग जैसी सुन्दर धरती,
बस! यहीं आबाद है।।

सिंधु, व्यास नदियाँ बहतीं,
जहाँ पर्वतों के बीच।
बड़ा मनोरम दृश्य रहा,
भरा पूरा प्राकृतिक सौंदर्य।।

प्रथम सिक्ख युद्ध में,
हुई सिक्खों की हार।
दण्डस्वरूप, ₹ एक करोड़ या,
कश्मीर को देना किया स्वीकार।।

पर पहाड़ी राज्य सुरक्षा,
का भार बहुत कठिन था।
इसीलिये गवर्नर जनरल ने,
इसे नहीं स्वीकार किया ।।

डोगरा सरदार आगे आये,
प्रदेश लेने की बात रखी।
बदले में गवर्नर जनरल को,
एक करोड़ की थैली भेंट की।।

देश विभाजन में,
पाक से हिंदू भागे।
घुसे जम्मू राज्य से,
वहीं पर डेरा भी डाले।

परिणाम हुआ इसका उलटा,
अल्पसंख्यक हुआ वहाँ मुसलमान।
कश्मीर में स्थिति रही यथावत,
बहुसंख्यक रहा यहाँ मुसलमान।।

वही नीति यहाँ लागू थी,
वो जुड़े भारत या पाक से।
भौगोलिक स्थिति थी बराबर,
चाहे जुड़े भारत या पाक से।।

मुस्लिम बहुल प्रदेश था,
हिन्दू शासन करता था।
स्वतंत्र रहे,करे स्वयं शासन,
हरि सिंह का यह सोच था।।

निर्णय से पाक नाराज हुआ,
सारा व्यवहार तोड़ लिया।
जीवनोपयोगी वस्तुओं का,
उसने सप्लाई रोक दिया।।

प्रजा का हाल बेहाल हुआ,
राजा, मदद भारत से मांगा।
भारत ने उसे स्वीकार किया,
हर संभव मदद को तैयार हुआ।।

दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा,
जम्मू कश्मीर पर आक्रमण।
इन पाकिस्तानी करतूतों से,
प्रजा होने लगी परेशान।।

कर्नल नरायण के नेतृत्व में,
कश्मीर रक्षा हेतु सेना भेजी।
अति विश्वासी मुस्लिम टुकड़ी ने,
उनके विश्वास की बलि चढ़ायी ।।

विकट स्थिति में कश्मीर ने,
लगायी भारत से मदद की गुहार।
पर संभव नहीं था ऐसा,
बिना हुए एकीकरण करार।।

महराज के हुए हिम्मत पस्त,
कश्मीर छोड़ आ गये जम्मू।
परिस्थिति को समझ बूझ,
मेनन फिर पहुँचे जम्मू।।

जैसे हुआ एकीकरण करार,
भारतीय फौजें हुई तैयार।
कश्मीर पर किया कूच,
करने 'स्वर्ग' पर अधिकार।।

चपलागति से हुआ आक्रमण,
विरोधियों के हौसले पस्त हुए।
जिन्ना के कश्मीर के सपने,
बस! धरे के धरे रह गये।।

जैसे हैदराबाद मिला,
वैसे ही मिले कश्मीर।
नहीं पक्ष में थे सरदार,
संयुक्त राष्ट्र जाए कश्मीर।।

पर किस्मत को मंजूर नहीं,
संयुक्त राष्ट्र गया कश्मीर प्रश्न।
विवाद अभी तक लटक रहा,
बन कर रह गया यक्ष प्रश्न।।

अतुल्य भारत

मध्य भारत, ग्वालियर, इंदौर,
धार, देवास, राजपूताना राज्य।
बड़ौदा राज्य, कोल्हापुर,
रचा संयुक्त सौराष्ट्र राज्य।।

सिक्ख राज्य पंजाब का,
जूनागढ़,हैदराबाद,कश्मीर।
राज्य उड़ीसा, छत्तीसगढ़,
मैसूर,त्रावणकोर, कोचीन।।

नहीं कभी पहले रहा,
ऐसा अनोखा अखण्ड भारत।
लोगों के समक्ष खड़ा हुआ,
अटूट मजबूत महाभारत ।।

अखण्ड माला तैयार हुई,
नव भारत का निर्माण हुआ।
महा शिल्पकार का सपना,
आखिर में साकार हुआ।।

हर चाल रहा अंग्रेजों का,
हर मोर्चे पर विफल रहा।
दृढ़ निश्चयी सरदार के आगे,
दुश्मन पनप नहीं पाया।।

महात्मा के सेनानी को भी थी,
एक कुशल सेनापति की तलाश।
निर्माण हो अखण्ड भारत का,
पूरा कर सके उनकी अभिलाष।।

ब्रिटिश राज्य प्रशासन में,
भी थे कुशल भारतीय प्रशासक।
क्या वे सही साबित होंगे?,
आजाद भारत के सही प्रशासक।।

संशय दृष्टि बनी रही उन पर,
देश भक्ति, देश प्रेम की।
पर उनके हृदय में भी रही,
भारत के प्रति भक्ति निष्ठा की।।

जब आया समय उनका,
उन्होंने भी कर्त्तव्य निभाया।
वी०पी०मेनन बने सेनापति,
सरदार का साथ निभाया।।

दिखला दिया हममें नहीं,
कमी है देशभक्ति की।
देश को एक बनाने में,
फिर सारी शक्ति लगा दी।।

धीरज, शांति, चतुराई,
संकल्प, सत्य अहिंसा का।
जन मानस के घर में घर कर,
दिलाई हम सबको प्रतिष्ठा।।

राष्ट्र की विकट समस्या,
का सुखद पटाक्षेप हुआ।
अंग्रेजों के बोए कांटो को,
एक एक कर उखाड़ फेंका।।

बिखरी मोतियों को चुन,
नव माला का निर्माण किया।
खण्डित होने के बदले में,
मजबूत भारत का निर्माण हुआ।।

कुशल शिल्पकार ने,
महात्मा का सपना साकार किया।
युगावतार के श्रीचरणों में,
अहिंसा का प्रसाद भेंट किया।।

अखण्ड अतुल्य भारत में,
एकता, चमन का फूल खिलाया।
बिना लोभ, मोह माया के,
जीवन देश को भेंट चढ़ाया ।।

साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिक हिंसा में,
नुकसान होता देश का।
गरीब पिसते है जहाँ,
घर बरबाद होता है उनका।।

आपस में कलह का,
यह बीज बोता है।
चमन से अमन का,
माहौल छीन लेता है।।

मिलता नहीं कुछ स्वार्थियों को,
बस अपना उल्लू साधते हैं।
आड़ लेकर इस कुकृत्य का,
समाज कलुषित करते हैं।।

राष्ट्र को करते हैं दुर्बल,
यही राष्ट्र - द्रोही है।
गरीबों का घर जलाकर,
समाज- सेवक बनते हैं।।

साम्प्रदायिकता से मिले मुक्ति,
रहे देश में सुख शांति।
विविधता भरे इस देश में,
कहीं पर नहीं हो अशांति।।

भारत में जो मुसलमान हैं,
सभी बाहर से हैं नहीं आए।
अन्य का भी यही हाल है,
पुरखे जन्में हैं इसी देश में।।

महान् राष्ट्र की संस्कृति सभ्यता में,
इनका अमिट योगदान है।
अंग्रेजी दासता के विरुद्ध युद्ध में,
सभी का यथाशक्ति योगदान है।।

साम्प्रदायिकता की आड़ में,
कुछ सेंक रहे हैं रोटियां।
राष्ट्रहित की कर तिलांजलि,
साध रहें हैं गोंटियाँ।।

अगर दिल दिमाग पाक में है,
तो वहीं जाकर बस जाइए।
रहना यदि भारत में है,
तो भारत का हित सोचिए।।

रहना यदि इस देश में,
देश - हित सोचना होगा।
दिल कहीं शरीर कहीं,
ऐसी मानसिकता त्यागना होगा।।

दो नाव की सवारी,
घातक होती है जानिए।
ध्यान रहे हम सबको,
इससे दूर रहना चाहिए।।

एकता अखण्डता के लिए,
हर जन को साथ होना चाहिए।
अगर कोई इनमें विघ्न डाले,
उसे मार भगाना चाहिए।।

अलवर, भरतपुर में जब,
हुए अल्पसंख्यक परेशान।
शासन व्यवस्था लिए अपने हाथ,
जब तक सुरक्षित नहीं हुए मुसलमान।।

भयभीत रामपुर - वासी,
दिल्ली में बने शरणार्थी।
भय दूरकर,पीड़ा सुन उनकी,
सकुशल वापसी की उनकी।।

भारत ही रहे मातृ - भूमि,
सोच उँची होनी चाहिए।
हम सबकी हो यही कर्मभूमि,
क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए।।

जामा मस्जिद,ताज महल,
भारत की शान है।
लाल किला, इंडिया गेट,
भारत की आन है।।

अशोक लाट, चारमिनार,
भारत की पहचान है।
काशी विश्वनाथ,स्वर्ण मंदिर,
आस्था की मिशाल है।।

कोई इन पर आँख उठाए,
उसको सबक सिखाना चाहिए ।
सबक सिखाने वालों पर,
हर जन को नाज होना चाहिए।।

साम्प्रदायिकता की बात कहे जो,
निरा मूर्ख समझना चाहिए।
स्पष्ट नीति रही उनकी,
इसमें खलल नहीं चाहिए।।

गंगा- यमुनी संस्कृति इसमें,
कलुषित नहीं होनी चाहिए।
साम्प्रदायिकता की समस्या को,
दृढ़ निश्चयी बन,समाप्त करना चाहिए।।

कर्त्तव्य मार्ग पर चलकर,
मंजिल तक पहुचे कैसे?
मार्ग में आती है बाधाएं,
इन सबसे निपटे कैसे?

देशभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठ के,
पंथ से डिगना नही चाहिए।
सरदार पटेल से हमें,
प्रेरणा लेनी चाहिए।।

स्वभाव

सरदार के क्रियाकलापों से,
कुछ लोग थे परेशान।
अपनी रोटियाँ सेकने में,
पड़ रहा था व्यवधान।।

स्वभाव के विरूद्ध,
कभी नहीं किया काम।
आरोपों की बौछारो से,
हो गये वो परेशान।।

बापू से मिलकर,
दिल की बात बताई।
नहीं तनिक इसमें,
कोई हिचक दिखलाई।।

नेहरु जी के उपर,
काम बोझ है ज्यादा।
मेरे कारण उनके हित में,
नहीं पड़े कोई बाधा।।

उनका बोझ शायद अब,
कम नहीं कर पाऊँ।
देश - हित में कही हम,
अब बाधक नहीं बन जाऊँ।।

सरकार से अलग,
होने का है मेरा इरादा।
जिससे देश का,
कल्याण हो सके ज्यादा।।

सत्ता की कुर्सी से,
चिपकने का नहीं इरादा।
बूढ़े कंधों पर अब,
बोझ हो गया ज्यादा।।

बार बार मेरा बचाव करना,
नहीं मुझे है भाता।
मैं इतना कमजोर नहीं,
स्वार्थ नहीं है कुछ मेरा।।

आपसी द्वंद देख,
दु:खी हुआ महामानव।
गहन चिंता में डूब गया,
आजादी का महानायक।।

आपस की लड़ाई में,
देश का ही नुकसान है।
मंत्रिमंडल में दोनों की सेवाएं,
देश हित में अनिवार्य हैं।।

बापू के अंतिम निर्णय को,
सरदार ने स्वीकार किया।
बापू को दिये वचन का,
अंत तक निर्वाह किया।।

अंतिम यात्रा

मृत्यु एक अटल सत्य है,
हर जीवन में आना है।
जीवन का सब लेखा जोखा,
छोड़ यहीं सब जाना है।।

रुग्ण बने काम में बाधा,
तनिक नहीं बनने दिए।
फोड़े ने यदि बाधा पहुँचायी,
सलाख से ही दाग दिए।।

आँत और कब्ज की पीड़ा,
से सदा रहे थे परेशान।
हृदय रोग ने उपर से,
आग में घी का किया काम।।

जीवन की आखिरी बेला में,
दिल्ली से मुम्बई प्रस्थान किए।
वातावरण अनुकूल मिले,
चैन मिले, आराम मिले।।

पंद्रह दिसंबर, उन्नीस सौ पचास,
अंतिम प्रहर में हृदयाघात हुआ।
हर चाहने वालों का मन,
गहरी चिंता में डूब गया।।

सरदार मूर्च्छित हो,
इह लोक से विदा हुए।
भारत जन को यहीं,
रोता विलखता छोड़ गये।।

प्रणाम

हे पटेल!
हे बल्लभ भाई!
हे भारत के विस्मार्क!
हे चाणक्य!
हे लौहपुरुष!
हे हिन्द के सरदार!

ऐसा कोई विघ्न नहीं,
जिसका हरण न हो सके।
लक्ष्य के आगे भला,
नहीं विघ्न कोई आ सके।।

आपने जो कर दिखाया,
सारे पदवी फीके पड़ रहे।
राष्ट्र ऋणी रहेगा सदा,
उसको जो उपहार दिये।।

हे रत्न पुरुष !
हे राष्ट्र पुरुष!
हे युग पुरुष!
हे आदर्श पुरुष!

शत शत नमन
हमारा स्वीकार करें।

।।इति।।

कवि परिचय

नाम-	प्रदीप कुमार
पिता-	श्री राम सागर सिंह
माता-	श्रीमती केशोमती देवी
जन्मतिथि-	14 अप्रैल, 1966
जन्म स्थान-	ग्राम- धनैता, पोस्ट- डोमनपुर चुनार, जनपद- मीरजापुर (उ0प्र0)
शिक्षा-	एम.काम.,: सी.ए.आई.आई.वी.
सेवा-	प्रबन्धक- देना बैंक